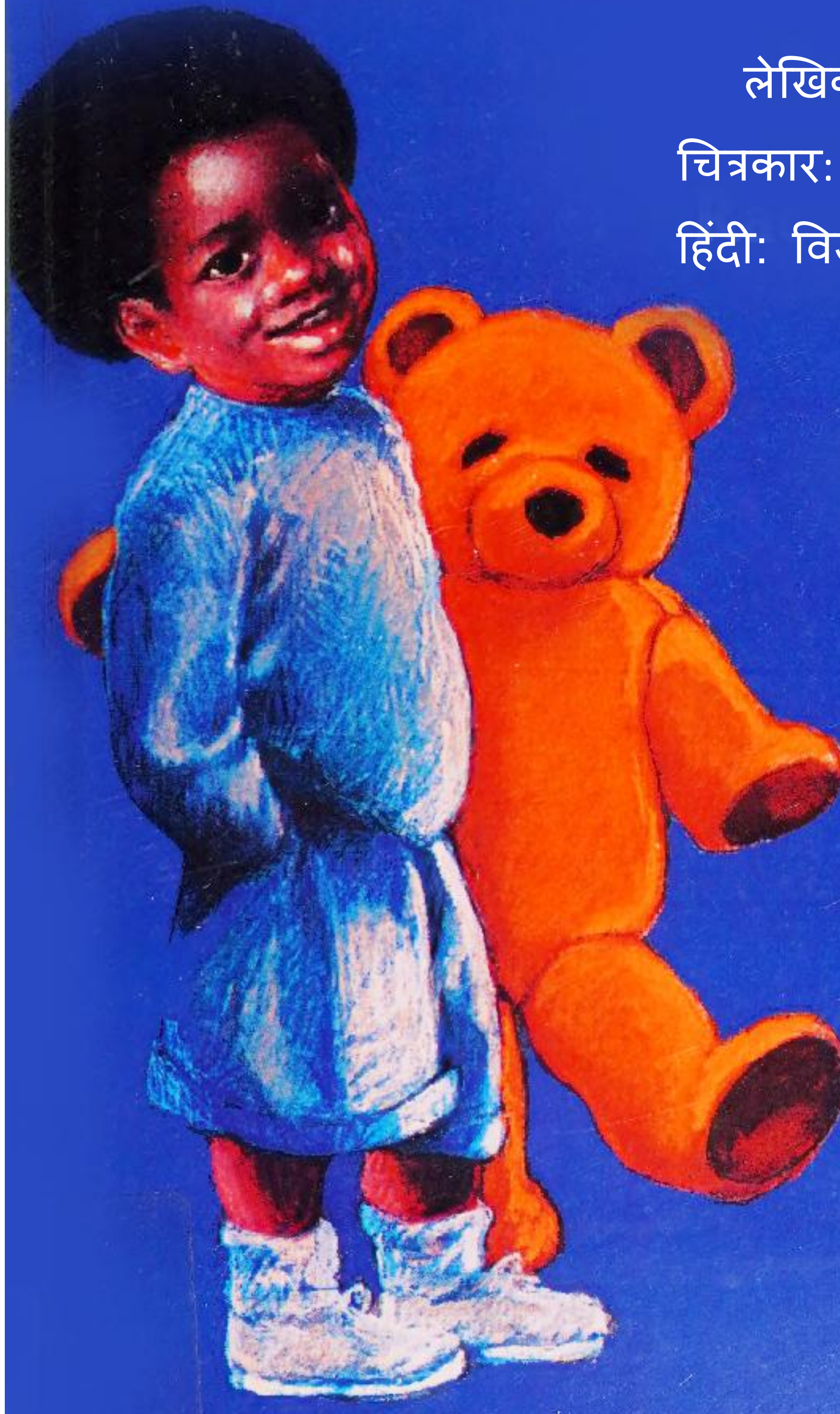
सुनहरा भालू

लेखिका: रूथ यंग
चित्रकार: रेकिल इसाडोरा
हिंदी: विजय चंद्र प्रकाश



सुनहरा भालू

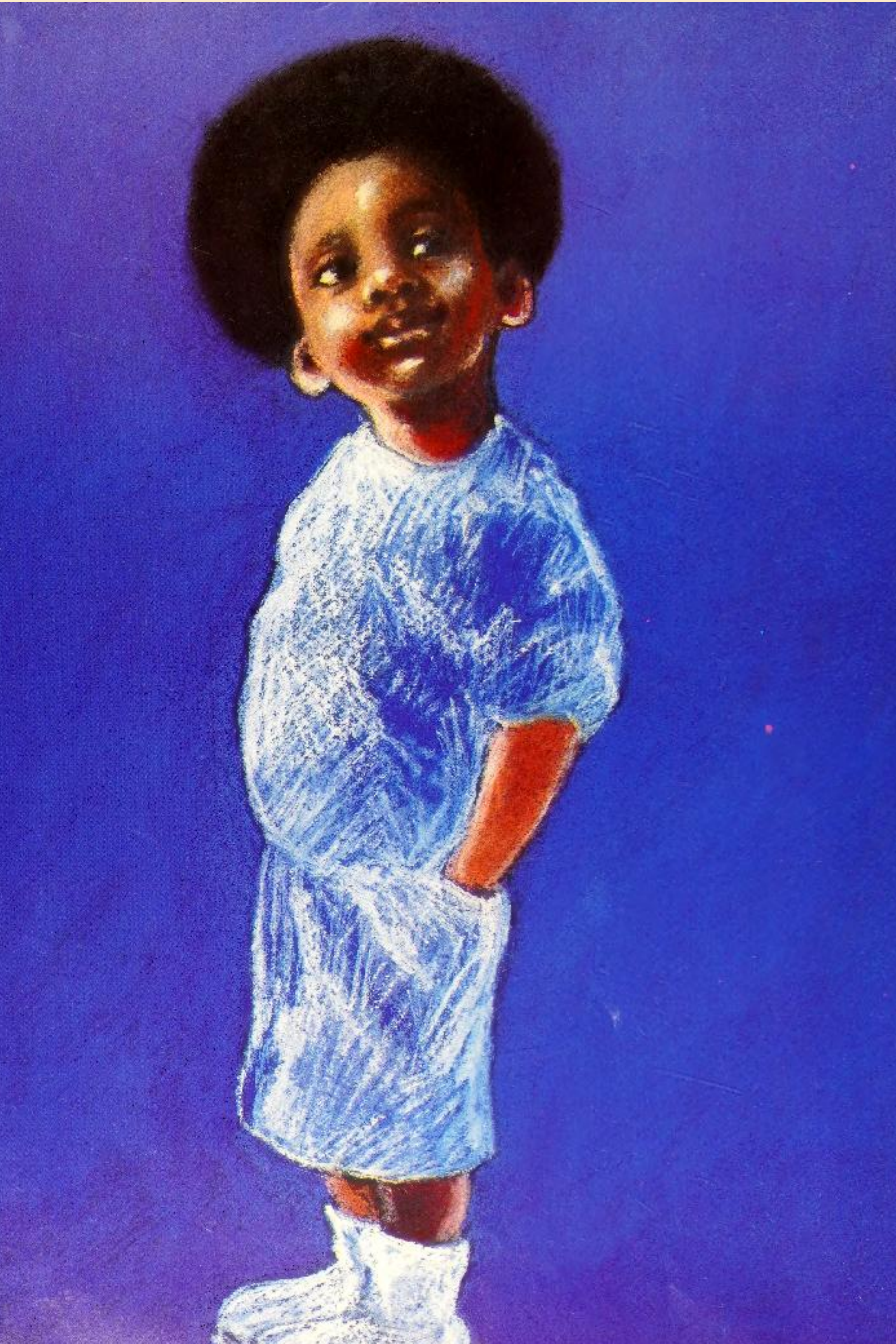
लेखिका: रूथ यंग

चित्रकार: रेकिल इसाडोरा

हिंदी: विजय चंद्र प्रकाश







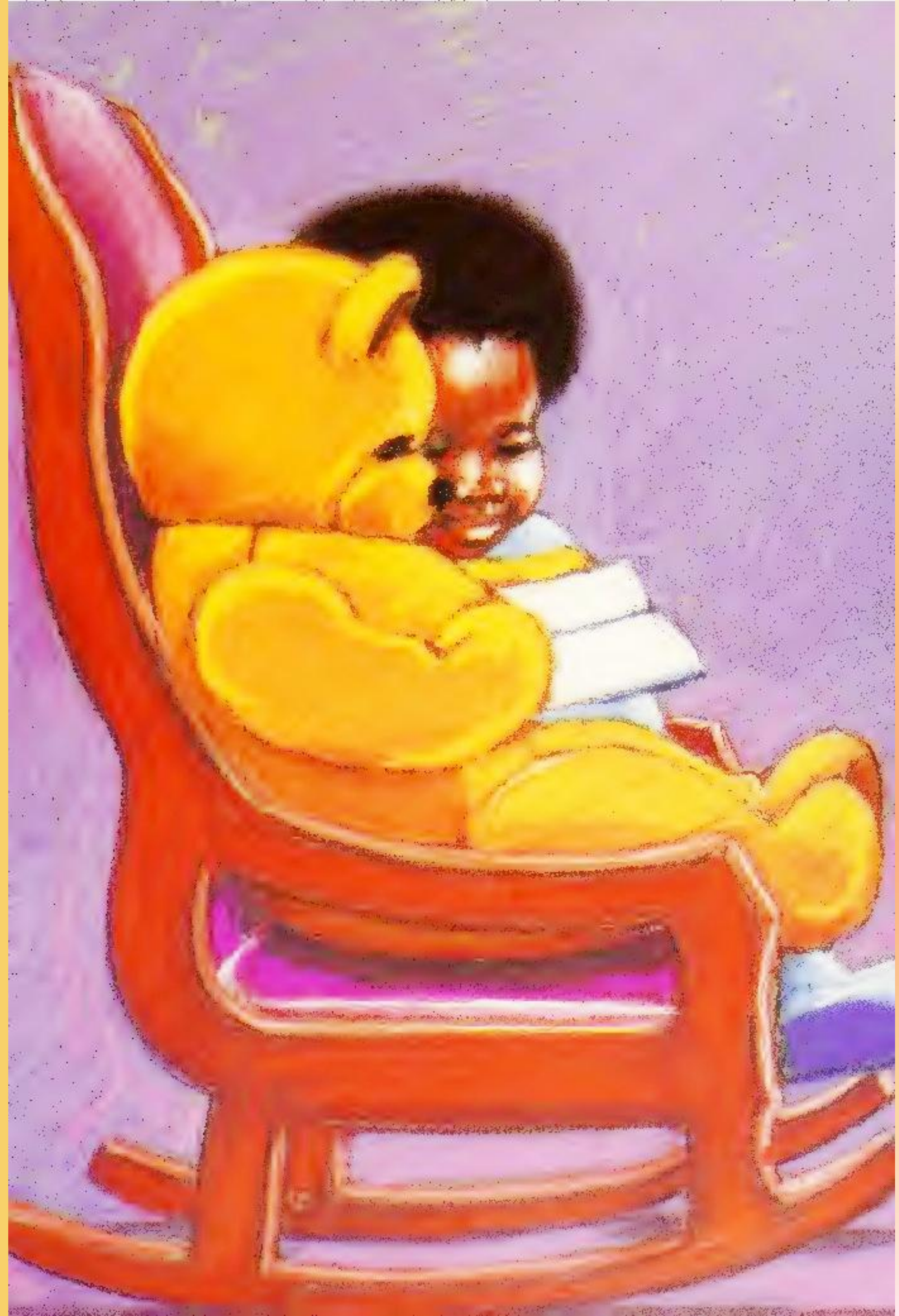
सुनहरा भालू, सुनहरा भालू,
मैंने उसे सब जगह देखा है:



सुनहरी सीढ़ी पर नाचते हुए



मेरी झूला कुर्सी पर झूलते हुए





अपनीं ठुड्डी के नीचे थामे हुए
बजा रहा है वायलिन



बड़े हरी कालीन पर आराम से बैठे हुए
एक छोटे से कीड़े से बातें करते हुए





चाँदी जैसी बर्फ़ पर तेज़ी से
स्केटिंग करते हुए, दो-दो गोले बना रहा है





बर्फ पर स्नोमैन बनाते हुए



ट्यूलिप फूलों को बढ़ते हुए देख रहा



बगीचे में बीज बो रहा है
मिट्टी से मड-केक बना रहा है,
जंगली घास उखाड़ रहा है





जब मैं एकदम अकेला था

तब मुझसे फ़ोन पर बातचीत करते हुए





हम दोनों टब में समुद्री डाकू बने है
हो, हो, हो! रगड़ो रगड़ो रगड़ो



हमें मछली जैसे बादल दिखते हैं

जैसे ही पहला तारा देखा

हमने तुरंत इच्छा पूर्ण होने का वर मांगा

सुन्दर सुंदर सपने देख रहे
सुनहरे भालू को पकड़ के साथ में



